अध्याय 11

सार्वभौमिक एवं समावेशी शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षक एजेंसियों की भूमिका

[ROLE OF AGENCY OF TEACHERS IN THE CONTEXT OF UNIVERSAL AND INCLUSIVE EDUCATION]

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा है—''समाज में अध्यापक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक एवं तकनीकी कुशलताओं को हस्तान्तरण करने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता देता है।''

भारतीय संविधान में प्रदत्त समता, स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय एवं व्यक्ति की गरिमा (Dignity of Person) आदि मूल्य लोकतांत्रिक समाज की स्थापना पर बल देते हैं। हमारे संविधान में भी जाति, वर्ग, धर्म, आयु एवं लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार के विभेद का निषेध किया गया है। इस प्रकार हमारा यह संविधान भी एक समावेशी समाज की संकल्पना को प्रस्तुत करता है, जिसके परिप्रेक्ष्य में बच्चे को सामाजिक, जातिगत, आर्थिक, वर्गीय, लैंगिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से भिन्न देखे जाने की बजाय एक स्वतन्त्र अधिगमकर्त्ता के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है। शिक्षा चूँकि समावेशन व सार्वभौमीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण औजार है, अतः इसके माध्यम से सार्वभौमिक व समावेशी शिक्षा की संकल्पना को साकार किया जा सकता है तथा समावेशन में बाधक तत्त्वों से भी निपटा जा सकता है।

सार्वभौमिक शिक्षा की आवश्यकता की पृष्ठभूमि (BACKGROUND OF NEED OF UNIVERSAL EDUCATION)

संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव **कोफी अन्नान** ने कहा था—''मानव इतिहास में बीसवीं सदी सबसे खूनी तथा हिंसा की सदी रही है। इस सदी में मानव जाति के समूल विनाश की हद तक जाकर प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध लड़े गये। जर्मनी तथा फ्रांस के बीच विवाद ही प्रथम तथा द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बना। बीसवीं सदी में अन्य राष्ट्रों के बीच भी अनेक युद्ध लड़े गये। जापान के हिरोशिमा तथा नागासाकी में अमेरिका द्वारा गिराये गये परमाणु बम का महाविनाश, प्रथम तथा द्वितीय खाड़ी युद्ध, दक्षिण कोरिया तथा उत्तरी कोरिया के बीच युद्ध, इजराइल, फिलीपीन्स के बीच युद्ध, ईरान-इराक के बीच युद्ध हुआ। भारत-पाकिस्तान के बीच तीन बार युद्ध हुए। भारत-चीन के बीच युद्ध हुआ। बीसवीं सदी में हुए इन सभी युद्धों में करोड़ों लोग मारे गये। युद्धों में अपार धनराशि व्यय हो रही है। आज हर देश दूसरे देश से अपनी सुरक्षा के नाम पर अपना रक्षा बजट प्रतिवर्ष बढ़ा रहा है। गरीब देश भी शस्त्रों

की होड़ में शामिल है। मानव जाति को मिलकर सोचना चाहिए कि आखिर इन युद्धों से हमें मिलता क्या है ? इन युद्धों से सबसे ज्यादा नुकसान छोटे-छोटे बच्चों एवं महिलाओं को होता है।

बीसवीं सदी में विश्व भर में युद्धों की विनाशलीला संकुचित राष्ट्रीयता के कारण हुई है, जिसके लिए सबसे अधिक दोषी हमारी **शिक्षा** है। विश्व के सभी देशों के स्कूल अपने-अपने देश के बच्चों को अपने देश से प्रेम करने की शिक्षा तो देते है, लेकिन सारे विश्व से प्रेम करना नहीं सिखाते है। यदि विश्व सुरक्षित रहेगा तभी इसके देश सुरक्षित रहेंगे। विश्व के बदलते हुए परिदृश्य को देखने से ज्ञात होता है कि 21वीं सदी की शिक्षा का स्वरूप बीसवीं सदी की शिक्षा से भिन्न होना चाहिए। 21वीं सदी की शिक्षा उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए, जिससे सारी मानव जाति से प्रेम करने वाले विश्व नागरिक विकसित हों। इसलिए 21वीं सदी की शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक बालक के दृष्टिकोण को संकुचित राष्ट्रीयता से विकसित करके विश्वव्यापी बनाना होना चाहिए।

मनुष्य को विचारवान बनाने की श्रेष्ठ अवस्था बचपन है। इसलिए संसार के प्रत्येक बालक को विश्व एकता एवं विश्व-शान्ति की शिक्षा बचपन से ही अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए। मानव इतिहास में वह क्षण आ गया है कि जब शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बनकर विश्वभर में हो रही उथल-पुथल का समाधान विश्व एकता तथा विश्व-शान्ति की शिक्षा द्वारा प्रस्तुत करना चाहिए। नोबेल पुरस्कार विजेता महान अर्थशास्त्रीजन **टिनबेरजेन** के ये विचार बरबस हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं—"राष्ट्रीय सरकारें विश्व के समक्ष उपस्थित संकटों का हल अधिक समय तक नहीं कर पायेंगी। इन समस्याओं के समाधान के लिए विश्व सरकार की आवश्यकता है।" **महात्मा गाँधी** ने कहा था कि यदि हम विश्व से युद्धों को समाप्त करना चाहते हैं तो इसकी शुरुआत हमें बच्चों से करनी होगी। चूँकि युद्ध के विचार मानव मस्तिष्क में पैदा होते हैं। इसलिए हमें मानव मस्तिष्क में ही शान्ति के विचार डालने होंगे।

सार्वभौमिक अर्थात् विश्व एकता की शिक्षा आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि विश्व के सभी लोग अपने आपसी मतभेदों को एक-एक करके कम करें तथा एकता व शान्ति के आदर्शों के अन्तर्गत एकताबद्ध हो जायें तो विश्वव्यापी आतंकवाद ही नहीं वरन् अशिक्षा, गरीबी, भुखमरी तथा पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान हो सकता है। गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड और यूनेस्को शान्ति शिक्षा पुरस्कार से सम्मानित सिटी मॉण्टेसरी स्कूल ने अपना नैतिक उत्तरदायित्व समझते हुए विश्व के दो अरब बच्चों तथा आगे आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए विगत 54 वर्षों से प्रयासरत है। सिटी मॉण्टेसरी स्कूल का मानना है कि विश्व एकता तथा विश्व-शान्ति की शिक्षा ही इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि एक बालक को भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की शिक्षाओं का सन्तुलित ज्ञान मिल जाये तो वह संसार का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बन सकता है। आज उद्देश्यपूर्ण शिक्षा द्वारा सारी दुनिया को बदलने के लिए सार्वभौमिक शिक्षा की आवश्यकता है।

अन्ततः वर्तमान में 'सार्वभौमिक शिक्षा' का सम्प्रत्यय हमारे प्राचीन **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की अवधारणा का ही दूसरा रूप है, जिसके द्वारा बाल्यावस्था से ही बच्चों को विद्यालय, परिवार तथा समाज के द्वारा यह विचार देना चाहिए कि ईश्वर एक है, सभी धर्म एक हैं तथा सम्पूर्ण मानव जाति एक है, सभी प्रकार के पूर्वाग्रह दूर हों, व्यक्ति स्वयं सत्य की खोज करे, एक सहायक विश्व भाषा हो, नारी तथा पुरुष समान हैं, विश्व की शिक्षा का स्वरूप एक हो, विज्ञान व धर्म में समन्वय हो, विश्व की एक अर्थव्यवस्था हो, एक प्रभावी विश्व न्यायालय का गठन हो, प्रभावी अन्तर्राष्ट्रीय कानून बनाने वाली विश्व संसद हो, विश्व की एक राजनीतिक व्यवस्था हो, एक भाषा, एक मुद्रा हो। विश्व सरकार बने तथा संस्कृतियों की विविधता की रक्षा हो। इस प्रकार एक न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था बनाकर निकट भविष्य में सारी वसुधा को

कुटुम्ब बनाने की परिकल्पना **सार्वभौमिक शिक्षा** द्वारा साकार हो सकती है तथा शिक्षक इसमें अपनी महती भूमिका निभा सकता है।

सार्वभौमिक शिक्षक की भूमिका (ROLE OF UNIVERSAL TEACHER)

21वी सदी के आरम्भ में वैश्विक शिक्षक समुदाय के समक्ष ''शिक्षा का वैश्विक (सार्वभौमिक) भविष्य'' द्रुत गति से विकसित हो रहा है। परन्तु उतनी ही द्रुत गति से शायद हमारी अध्यापक शिक्षा व्यवस्था विकसित होती नजर नहीं आ रही है। यही कराण है कि हमारे द्वारा निर्मित किए जा रहे शिक्षक स्वयं को **'सार्वभौमिक शिक्षक'** के रूप में प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं तथा वे कहीं भी हमारे महान शिक्षकों जैसे डॉ. राधाकृष्णन्, गिजूभाई, मारिया मॉन्टेसरी आदि के समकक्ष अपने को प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं। इसका कारण यही है कि आज के प्रचलित शिक्षकों का वैश्विक शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान नहीं दिखाई देता है, वे अपने को व अपने शिक्षण व्यवसाय को वैश्विक दृष्टि से नहीं देख पा रहे हैं। आज ऐसे शिक्षक नहीं हैं जिनके मूल्य, आदर्श, व्यवहार व सोच विश्व समाज के लिए अनुकरणीय हों तथा वे बालक में विश्वनागरिकता की स्वधारणा का बोध करा सकते हों। क्योंकि ऐसे शिक्षकों के लिए तो यह अपरिहार्य शर्त हो जाती है कि वे अपने शिक्षण को व्यवसाय न मानते हुए सामाजिक कर्त्तव्य मानें। अतः आज नहीं तो अगली सदी में ऐसे शिक्षकों का निर्माण करने की महती आवश्यकता है जो अगली सदी को एक सार्वभौमिक शैक्षिक समाज में बाँधने में समर्थ हो सकें।

सार्वभौमीकरण के इस युग में यदि कोई व्यक्ति विश्व को एक भावी ग्राम के रूप में स्थापित करने एवं सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक दूरियों का पाटने का कार्य करने में समर्थ है तो वह शिक्षक ही हो सकता है और वह भी ऐसा शिक्षक जो स्वयं को सार्वभौमिक शिक्षक कहला सके। इसके लिए सार्वभौमिक शिक्षक में निम्न गुणों का होना आवश्यक है–

- एक नव वैश्विक संस्कृति जो सर्व स्वीकार्य हो, की स्थापना करने में समर्थ हो।
- नवीन शैक्षिक पर्यावरण का निर्माण करने में समर्थ हो जो वैश्विक ग्राम द्वारा अनुकरणीय हो।
- जो अवस्था परिवर्तन के सन्दर्भ में नवीन मूल्यों की स्थापना करने से समर्थ हो।
- विश्व में प्रचलित तथ्यों, सूचनाओं, विश्लेषणात्मक शोधों के निष्कर्षों को अंगीकार कर निर्माण कार्य में संलग्न हो।
- सार्वभौमीकरण के अन्तर्गत केवल आधुनिकीकरण की संकल्पना के स्थापन के स्थान पर परम्परागत व पाश्चात्य विचारों, विमर्शों एवं तथ्यों की स्थापना करवाने में समर्थ हो।
- नई पीढ़ी को श्रम के प्रति निष्ठावान बनाने में समर्थ हो।
- नई पीढ़ी को थोथे तथ्य व मान्यताएँ थोपने के स्थान पर विवेक सम्मत विचारों के आधार पर स्वीकार्य को ही स्वीकारने की क्षमता उत्पन्न करने वाले हों।
- वैश्विक बालक में विवेक की जागृति करने वाला हो।
- तकनीकी व सूचना संचार के माध्यम से स्वयं अपनी जानकारियों के साथ अपने बच्चों की जानकारियों को भी नवीनता करने वाला हो।
- केवल तकनीकी ही नहीं अपितु वास्तविक जीवन संग्राम में खरे उतरने की सीख देने वाला हो।
- अनुभवजनित ज्ञान करवाने का अभ्यस्त हो एवं नवीन ज्ञान प्राप्त करने के आधार के रूप में क्रियात्मक आधार का चयन कर प्रयोग करने वाला हो।
- छात्र को सार्वभौमिक परिचय प्राप्ति के लिए प्रेरित कर भीड़ का हिस्सा बनने के स्थान पर नवीन मार्ग तलाशने पर जोर देने वाला हो।

- विश्व ज्ञान भण्डार का पिपासु हो और अर्जित ज्ञान को विश्व में प्रसारित करने वाला हो।
- आत्मा व विवेक के आधार पर नवीन का चयन करने वाला हो एवं करवाने वाला हो। साथ ही वैश्विक ज्ञान भण्डार का विकास करने में सामर्थ्य रखने वाला हो।
- विश्व व स्थानीय जनसमुदायों एवं अपने छात्रों में पारस्परिक संवादों को बढ़ावा देने के साथ नवीन विकास, नवीन व्यवहार व नवीन सोच को जन्म देने में समर्थ हो।
- विश्व नागरिकता की स्वधारणा का बोध कराते हुए स्थानीय मसलों की शिक्षा देने वाला हो।
- विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत "विश्वव्यापी शान्तिपूर्ण संस्कृति" के विकास में सहायक हो।

अतः वर्तमान सार्वभौमिक परिवेश में यदि हम शिक्षकों को सार्वभौमिक शिक्षक की भूमिका निभायें हेतु तैयार करना चाहते हैं तो इसके लिए निम्न प्रयास करने होंगे—

- नये शिक्षकों को औपचारिक शिक्षक पद प्राप्ति की धारणा से शिक्षक पेशे से सम्बन्धित सकारात्मकताओं से युक्त किया जाये।
- शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम का नवीनीकरण कर सेकेण्डरी के पश्चात् ही शिक्षा विषय की व्यवस्था कर अन्य डॉक्टर, इंजीनियर के समान शिक्षक पेशे को भी विशिष्ट दर्जा दिया जाये।
- शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों हेतु मानक मजबूत किए जायें।
- शिक्षक विश्वविद्यालय की स्थापना हर राज्य में अनिवार्यतः की जाए।
- निर्मित किए जाने वाले शिक्षकों को अनिवार्यतः तकनीकी व सूचना प्रौद्योगिकी से युक्त किया जाए।
- नव शिक्षकों को परम्परागत ज्ञान के प्रति आकर्षित किया जाए एवं विवेक सम्मत स्वीकार कर नवीन ज्ञान के साथ तालमेल करवाते हुए इस वैश्विक प्रसारण हेतु प्रेरित किया जाए।
- नवीन तकनीकी व नवीन विधियों के माध्यम से शिक्षण करने हेतु प्रेरित किया जाए साथ ही अनुभव एवं क्रियाधारित सीखने-सिखाने हेतु प्रेरित किया जाए।
- शिक्षक की पहचान निर्माण हेतु विशिष्ट प्रयास समेकित रूप से किए जाएँ।
- शिक्षक में यह भाव जाग्रत किए जाएँ कि—
  - मैं कौन हूँ ?
  - मेरा आदि-अन्त क्या है ?
  - मेरा जन्म क्यों हुआ है ?
  - मैं क्या कर रहा हूँ ?
  - मुझे क्या करना है ?
  - मेरा लक्ष्य क्या है ?

उक्त प्रश्नों के समाधान एक सार्वभौमिक शिक्षक की भूमिका को ध्यान रखकर पूछे जायें तथा स्वयं को वैश्विक पटल पर स्थापित करने हेतु अतिरिक्त प्रयास किए जायें। इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि—

(1) वह भयमुक्त होकर स्वयं को वैश्विक अस्तित्व के भावों के प्रति जागरूक रखे जिसके लिए असहिष्णुता के स्थान पर परम्परागत व नवीन विधियों के बीच तालमेल बनाने का प्रयास करें।

(2) सार्वभौमिक शिक्षक बनने हेतु आवश्यक है कि वह अपनी संस्कृति, धर्म, विचार, साहित्य, परम्पराओं के प्रति अपनी समझ को मजबूत बनाए ताकि जुड़ाव व विस्तार को स्थान मिल सके।

(3) सार्वभौमिक शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह नव शिक्षकों में विविध संस्कृतियों, धर्मों, विचारों के प्रति सम्मान के भाव जागृत करे व विविधता में एकता के भावों की स्थापना करे तो सार्वभौमीकरण के लाभों से यह विश्व समाज लाभान्वित हो सकेगा।

(4) शिक्षकों को विविध संस्कृतियों, धर्मों, राष्ट्रों साहित्यों के मध्य संवाददाता के रूप में स्वयं को सेतु के रूप में निर्मित करना होगा। तभी सार्वभौमीकरण सफलदायी होगा एवं शिक्षक पूरे विश्व को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत करने के अवसर प्रस्तुत कर सकेगा।

परन्तु सबसे पहले शिक्षक को स्वयं इन गुणों से युक्त होना होगा। शिक्षक का हृदय विशाल हो, क्योंकि व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने वाला शिक्षक ही बालकों में इस बात को आसानी से अंकित कर सकता है कि वर्ण, जाति तथा धर्म आदि मानव को मानव से पृथक् नहीं कर सकते, अपितु ये तो केवल उसकी निजी भावनायें ही हैं जो इसको एक-दूसरे से अलग कर सकती हैं। वह बालकों के हाथ में इस भावना को भी भर सकता है कि संसार एक इकाई है तथा उसका राष्ट्र इस इकाई का एक भाग है। ऐसी स्थिति में यदि कोई राष्ट्र प्रगतिशील राष्ट्रों के साथ-साथ उन्नति नहीं कर रहा है तो यह भयंकर समस्या हो सकती है। मानव का कल्याण तो इसी में है कि संसार के सभी निवासी आपस में प्रेम व सहयोग के साथ भाई-भाई की तरह रहें। यही नहीं, शिक्षक बालकों को भी यह बात आसानी से बता सकता है कि संस्कृति किसी अमुक व्यक्ति अथवा समूह की निजी सम्पत्ति नहीं है, अपितु विभिन्न जातियों या राष्ट्रों के सामूहिक प्रयासों का फल है। **सार्वभौमिक शिक्षा** देते समय शिक्षक केवल पाठ-विषयों के प्रस्तुत करने तक ही सीमित नहीं रह सकता, अपितु वह अन्तर्राष्ट्रीय त्योहारों, जयन्तियों, अन्तर्राष्ट्रीय मेलों, सप्ताहों, नाटकों तथा उत्सवों एवं अन्तर्राष्ट्रीय बातों पर वाद-विवाद आदि पाठ्यान्तर क्रियाओं के द्वारा भी उनमें अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे की भावना का समावेश कर सकता है।

प्रत्येक बालक में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो जन्मजात पाये जाते हैं। ये गुण प्रायः आनुवंशिकता से सम्बन्धित भी हो सकते हैं अथवा नहीं भी। इन्हीं गुणों के आधार पर ही बालकों का शैक्षिक स्तर निर्भर करता है। सामान्य बालकों का शैक्षिक स्तर उनकी बुद्धिलब्धि तथा क्षमताओं के आधार पर ही तय किया जाता है। ठीक इसी प्रकार वह बालक जो कि विशिष्ट बालक होते हैं उन्हें भी शिक्षा के पूर्ण अवसर प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होता है। इन बालकों को दी गई शिक्षा अलग-अलग प्रकार की होती है क्योंकि इन बालकों का शैक्षिक स्तर अलग-अलग होता है।